

प्रेमचन्द की कहानियों में सामाजिक चेतना: एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ नरेश कुमार वर्मा

सह आचार्य राजकीय महाविद्यालय टोंक (राजस्थान)

Abstract: हिंदी कथा-साहित्य में प्रेमचन्द की कहानियाँ सामाजिक यथार्थ, नैतिक विवेक और मानवीय संवेदना की प्रभावी अभिव्यक्ति हैं। उसकी कथा-दृष्टि में समाज कथा-वस्तु का सक्रिय और निर्णायक तत्व है और सिर्फ पृष्ठभूमि है। प्रेमचन्द ने साहित्य का केंद्र किसान, मजदूर, स्त्री, निम्न-मध्यवर्ग, धार्मिक-सामुदायिक समूह, औपनिवेशिक व्यवस्था से पीड़ित आम आदमी बनाया। प्रेमचन्द की कहानियों में सामाजिक चेतना के कई पहलुओं का विश्लेषण इस समीक्षा-पत्र में किया गया है। अध्ययन में कफन, पूस की रात, सद्गति, ठाकुर का कुआँ, ईदगाह, बूढ़ी काकी, नमक का दारोगा, पंच परमेश्वर, दो बैलों की कथा और शतरंज के खिलाड़ी जैसी महत्वपूर्ण कहानियों के आधार पर सामाजिक अन्याय, जातिगत विषमता, आर्थिक शोषण, स्त्री-अस्मिता, मानवीय करुणा, नैतिकता, सामुदायिक संबंधों और अध्ययन से पता चलता है कि प्रेमचन्द की सामाजिक चेतना कथा-संरचना, पात्र-निर्माण और यथार्थपरक परिस्थितियों के माध्यम से विकसित होती है, न कि उपदेशात्मक रूप से। वे समाज की कुरूपता को उजागर करते हैं, लेकिन सिर्फ आलोचना नहीं करते; उन्होंने न्याय, सहानुभूति और मानवीय गरिमा की संभावनाओं को भी चित्रित किया है।

Keywords: प्रेमचन्द, सामाजिक चेतना, हिंदी कहानी, यथार्थवाद, किसान जीवन, जाति-व्यवस्था, मानवीय संवेदना.

INTRODUCTION

प्रेमचन्द हिंदी कथा-साहित्य में अद्वितीय है क्योंकि उन्होंने कहानी को मनोरंजन, रोमांस या आदर्शवादी विचारों तक नहीं सीमित रखा, बल्कि उसे भारतीय समाज के वास्तविक जीवन-संघर्षों से जोड़ा। उनकी कहानियों में परिवार, गाँव, कस्बा, खेत, जाति-संबंध, आर्थिक अभाव, धार्मिक रूढ़ि, प्रशासनिक भ्रष्टाचार और नैतिक संकट शामिल हैं। प्रेमचन्द के पास साहित्यिक जीवन से अलग कोई छुट्टी नहीं है; वह समाज में मनुष्य की स्थिति का विवेकपूर्ण चित्रण है। इसलिए उनकी कहानियाँ सिर्फ मनोरंजन नहीं देतीं, बल्कि पाठकों को अपने समय, समाज और मानवीय कर्तव्यों पर सोचने को भी मजबूर करती हैं। प्रेमचन्द के प्रतिनिधि कहानी-संकलन मानसरोवर में उनकी कई सामाजिक कहानियाँ शामिल हैं, जो भारतीय समाज के कई वर्गों और संघर्षों को चित्रित करते हैं (प्रेमचन्द, 2022)। प्रेमचन्द की सामाजिक चेतना को समझने के लिए उनके जीवन और युगीन संदर्भ को देखना चाहिए। वे लिख रहे थे जब भारतीय समाज जमींदारी व्यवस्था, औपनिवेशिक शासन, जातिगत विषमता, स्त्री-असमानता, महाजनी शोषण और राष्ट्रीय जागरण के दबावों से गुजर रहा था। अमृत राय ने प्रेमचन्द के जीवन-वृत्त को उनके लेखकीय संघर्षों, सामाजिक अनुभवों और मानवीय दृष्टि से जोड़कर देखा है, जिससे स्पष्ट होता है कि प्रेमचन्द की रचनाएँ सिर्फ साहित्यिक कल्पना नहीं, बल्कि जीवन-संपर्क से निर्मित संवेदनात्मक सत्य हैं ((Rai, 2006) साथ ही, रामविलास शर्मा ने प्रेमचन्द को उनके युग की ऐतिहासिक शक्तियों और सामाजिक संघर्षों की पृष्ठभूमि में पढ़ा है, जिससे उनकी सामाजिक दृष्टि का आलोचनात्मक महत्त्व स्पष्ट होता है (Sharma, 2016) प्रेमचन्द की कहानियों में आम आदमी को कथा का

केंद्रीय पात्र बनाया जाता है। यहाँ प्रस्तुत किए गए प्रत्येक पात्र उनकी व्यक्तिगत मनोवृत्ति का प्रतिनिधित्व नहीं करता, बल्कि व्यापक सामाजिक संरचना से प्रभावित होता है। हल्कू, घीसू, माधव, दुखी, गंगी, हामिद, बूढ़ी काकी, वंशीधर, अलगू और जुम्नन सबके अपने-अपने सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिचय हैं। प्रेमचन्द का साहित्य इस बात को स्पष्ट करता है कि समाज की असमान संरचनाएँ संवेदना, व्यवहार, निर्णय और नैतिकता पर किस प्रकार प्रभाव डालती हैं। यही कारण है कि उनकी कहानियों में सामाजिक चेतना साहित्यिक रूप से व्यापक और वैचारिक महत्वपूर्ण है।

सामाजिक चेतना की संकल्पना और अध्ययन की पद्धति

सामाजिक चेतना का अर्थ है एक जागरूक दृष्टि जो अन्याय, शोषण, असमानता, रूढ़ि, पाखंड और मानवीय पीड़ा को पहचानती है और उनके प्रति आलोचनात्मक और भावुक प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है। साहित्यिक चेतना केवल सामाजिक समस्याओं की सूची नहीं है; वह चरित्र, घटना, संवाद और प्रतीक के रूप में जीवन की विसंगतियों को चित्रित करने की कलाविधि से बनाई जाती है। यह चेतना स्पष्ट रूप से नारे या उपदेशों के रूप में नहीं पैदा होती, बल्कि कहानी-स्थितियों में पैदा होती है। पात्रों की नियति से गुजरते हुए पाठक समाज के नैतिक ढाँचे पर सोचता है। इस समीक्षा पत्र में पाठ का विश्लेषण किया गया है। प्रमुख कहानियों का चयन सामाजिक विषय, कथा-प्रसंग और आलोचनात्मक महत्त्व के आधार पर किया गया है। पूस की रात और कफन में किसान जीवन और आर्थिक विषमता की व्याख्या की गई है; सद्गति और ठाकुर का

कुआँ जाति और अस्पृश्यता का मुद्दा उठाता है; ईदगाह, बूढ़ी काकी और दो बैलों की कहानी में करुणा, काम और मानवीय संबंधों का महत्व है; परमेश्वर के नमक के दारोगा और पंच में नैतिकता और न्याय की चेतना की परीक्षा दी गई है; और शतरंज खिलाड़ी की सामंती मानसिकता और ऐतिहासिक अचेतनता का अध्ययन किया गया है। अध्ययन का आधार मुख्यतः प्रेमचन्द की मूल कहानियों के प्रमाणित संकलन और महत्वपूर्ण आलोचनात्मक लेखों से बना है। सन्दर्भों में वही पुस्तकें दी गई हैं जिनका अस्तित्व पुष्टि किया गया है और प्रेमचन्द अध्ययन में उनका व्यापक प्रयोग किया जाता है। इसलिए, इस समीक्षा में वास्तविक पुस्तकीय स्रोतों का उपयोग किया गया है, न कि अनावश्यक या संदिग्ध संदर्भों।

प्रेमचन्द की सामाजिक दृष्टि: यथार्थ और करुणा का संयोजन

प्रेमचन्द की सामाजिक दृष्टि का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा यह है कि वे समाज को ठोस जीवन परिस्थितियों में स्थित व्यक्ति के रूप में नहीं देखते, बल्कि एक अमूर्त विचार के रूप में देखते हैं। उनकी कहानियाँ इस विचार को चुनौती देती हैं कि साहित्य सिर्फ सौंदर्य का उत्पाद है। वे जीवन के संघर्ष, करुणा और नैतिक संभावनाओं में सुंदरता खोजते हैं। यद्यपि उनकी कथा-भाषा साधारण है, वह समाजशास्त्रीय अर्थों से भरी हुई है। प्रेमचन्द किसी किसान की ठिठुरती रात, किसी दलित की असहाय मृत्यु, किसी बच्चे का त्याग, किसी वृद्ध की भूख, किसी ईमानदार कर्मचारी का संघर्ष या किसी किसान की ठिठुरती रात को ऐसी भावना से प्रस्तुत करता है कि निजी घटना सामाजिक अर्थ ग्रहण कर लेती है।

Premchand की करुणा एक निष्क्रिय भावुकता नहीं है। वे पाठक को रुलाने के लिए गरीबी या पीड़ा नहीं दिखाते; वे मानव को ऐसी स्थिति में लाने वाली व्यवस्था बनाते हैं। उदाहरण के लिए, कफन में घीसू और माधव का व्यवहार पहली नज़र में अमानवीय लगता है, लेकिन कहानी यह भी बताती है कि निरंतर अभाव और सामाजिक उपेक्षा मनुष्य की भावना को खराब कर सकती है। यही कारण है कि पूस की रात में हल्कू का खेत नष्ट हो गया; यह सिर्फ किसान की निजी विफलता नहीं है, बल्कि उस शोषणकारी व्यवस्था की विडंबना है जिसमें किसान अपने काम से भी सुरक्षित नहीं रहते। इसीलिए प्रेमचन्द की कहानियाँ जटिल हैं; वे गहरे सामाजिक यथार्थ के साथ अपराधी, पीड़ित और व्यवस्था के संबंध को प्रस्तुत करते हैं, न कि एकरेखीय ढंग से। रामविलास शर्मा ने प्रेमचन्द के लेखों को भारतीय किसानों और जनजीवन के व्यापक ऐतिहासिक संदर्भों से जोड़ा (शर्मा, 2016)। इस दृष्टि से प्रेमचन्द का

यथार्थवाद सामाजिक संबंधों की पहचान है, न कि सिर्फ दृश्य-वर्णन। वे सांस्कृतिक, आर्थिक और जातिगत शक्तियों को मानव व्यवहार के पीछे बताते हैं। यही कारण है कि उनकी कहानियाँ आज भी साहित्य, सामाजिक विज्ञान और इतिहास के विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण पाठ हैं।

किसान जीवन, गरीबी और आर्थिक शोषण

सामाजिक चेतना का प्रमुख आयाम प्रेमचन्द की कहानियों में किसान जीवन का चित्रण है। पूस की रात में हल्कू एक भारतीय किसान है जिसके पास खेत, काम, परिवार है, लेकिन जीवन की मूल सुरक्षा नहीं है। ठंडी रात में खेत की देखभाल करते हुए हल्कू की स्थिति ऋतु की कठोरता को भी बताती है, साथ ही आर्थिक व्यवस्था भी। कर्ज और अभाव उसे घेर रहे हैं; ठंड से बचने के लिए कम्बल खरीद तक नहीं सकता। कथा का दुखद पक्ष यह है कि खेत नष्ट होने के बाद भी उसे कुछ राहत मिलती है, क्योंकि उसे ठंडी रातों में खेत की देखभाल नहीं करनी पड़ेगी। इस विडंबना से पता चलता है कि जब कर्मचारी स्वयं सुरक्षित नहीं होते, तो श्रम की रक्षा भी खराब हो जाती है।

आर्थिक अभाव का चित्रण कफन में और अधिक स्पष्ट और जटिल है। माधव और घीसू समाज के निचले स्तर पर रहते हैं और उनका जीवन भूख, असुरक्षा और सामाजिक अपमान से भरता है। प्रसव पीड़ा से बुधिया मरती है और पिता-पुत्र कफन के पैसों से शराब पीते हैं। पाठक कहानी का यह प्रसंग से परेशान हो जाता है। क्या यह सिर्फ नैतिक गिरावट का परिणाम है, या ऐसी सामाजिक व्यवस्था का परिणाम है जो लोगों को कम से कम भावना से भी वंचित कर दिया है? यहाँ प्रेमचंद को कोई सरल उत्तर नहीं मिलता। वे पाठक को यह समझने पर मजबूर करते हैं कि गरीबी सिर्फ संसाधनों की कमी नहीं है, बल्कि मनुष्य की आत्मा और नैतिकता पर भी चोट लगती है।

प्रेमचन्द का व्यापक सामाजिक सरोकार किसानों और निम्नवर्गीय जीवन को देखता है। प्रेमचन्द की रचनाओं को अमृत राय ने ग्रामीण भारत, आर्थिक संघर्ष और सामाजिक असमानता के कई रूपों से जोड़ा है (राय, 2006)। यही कारण है कि प्रेमचन्द की कहानियाँ किसान को केवल करुणा का पात्र नहीं बनातीं, बल्कि उसकी स्थिति के पीछे काम कर रही व्यवस्था की आलोचना करती हैं। शोषण उनके यहाँ सामाजिक ढाँचे की समस्या है, न कि एक व्यक्ति की बुराई।

जाति-व्यवस्था और अस्पृश्यता की आलोचना

जाति-व्यवस्था की आलोचना प्रेमचंद की सामाजिक चेतना का सबसे प्रखर उदाहरण है। सद्गति में दुखी

चमार की कहानी जातिगत शोषण का गंभीर उदाहरण है। दुखी पंडित को शुभ मुहूर्त बताया जाता है, लेकिन बदले में उसे काम करना होता है। वह काम करते-करते भूखा-प्यासा मर जाता है। उसकी मृत्यु के बाद पंडित और समाज को यह प्रश्न उठता है कि उसके शव को कौन छुएगा। यह घटना जाति-व्यवस्था की अमानवीयता को स्पष्ट करती है। जबकि जीवित दुखी से काम लिया जा सकता है, मृत दुखी का शरीर छुना धार्मिक रूप से अनुचित है। पानी, ठाकुर के कुआँ में गंगी का संघर्ष, जीवन की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है। कुआँ केवल जल नहीं देता; वह सामाजिक पदार्थ है। निम्नलिखित जाति को ऊँची जाति का कुआँ नहीं लगाना चाहिए। गंगी अपने बीमार पति के लिए साफ पानी चाहती है, लेकिन उसे जातिगत व्यवस्था से वंचित करती है। कहानी में भय, अपमान और प्रतिरोध का वातावरण दिखाता है कि अस्पृश्यता केवल धार्मिक या सांस्कृतिक आस्था नहीं है, बल्कि संसाधनों पर नियंत्रण की प्रणाली है। यहाँ प्रेमचंद जाति को सामाजिक अन्याय की संरचना बताते हैं। प्रेमचंद का महत्व इस बात में है कि वे दलितों या निम्नवर्गीय लोगों को सिर्फ दया के पात्र बनाते हैं। वे अपनी पीड़ा को सामाजिक व्यवस्था की आलोचना में परिवर्तित करते हैं। सद्गति और ठाकुर का कुआँ की कहानियाँ आजकल चलने वाले मानवाधिकार, समानता और गरिमा के मुद्दों से भी जुड़ी हुई हैं। प्रेमचंद के लेखों से पता चलता है कि जब तक समाज लोगों को जन्म के आधार पर विभाजित करता रहेगा, तब तक समाज की नैतिकता पूरी तरह से बेकार हो जाएगी। प्रेमचंद की कहानियाँ हिंदी साहित्य में सामाजिक न्याय की पहली और प्रभावशाली आवाजों में से एक हैं।

स्त्री-जीवन, परिवार और सामाजिक संरचना

प्रेमचंद की कहानियों में स्त्री-जीवन की समस्याएँ भी सामाजिक चेतना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। स्त्री पात्रों को केवल भावुक या घरेलू चित्रण नहीं बनाया गया है; वे परिवार और समाज के मूल्यों को दिखाते हैं। बूढ़ी काकी में एक वृद्ध महिला की भूख सिर्फ भोजन की नहीं है; वह सम्मान, स्नेह और देखभाल की भी भूख है। वह अपने शरीर और संपत्ति से लाभ ले चुका है, लेकिन परिवार उसे वृद्धावस्था में उपेक्षित करता है। कहानी एक संयुक्त परिवार के मूल्यों पर सवाल उठाती है। यदि परिवार में करुणा और जिम्मेदारी नहीं है, तो वे सिर्फ संबंधों का निर्माण होंगे। आनंदी एक बड़े घर की बेटी में परिवार को टूटने से बचाती है। यह कहानी पारिवारिक सामंजस्य का एक उदाहरण है, लेकिन यह पितृसत्तात्मक परिवार की रचना भी दिखाती है, जहाँ स्त्री से त्याग और धैर्य की अपेक्षा की जाती है। प्रेमचंद आनंदी को नैतिक बल देते हैं, लेकिन यह भी स्पष्ट है कि स्त्री पर परिवार की प्रतिष्ठा बचाने का अधिक बोझ रहता है। इस प्रकार कहानी

पारिवारिक संबंधों में असमानता को अप्रत्यक्ष रूप से उजागर करती है और स्त्री के योगदान को रेखांकित करती है। प्रेमचंद की कई कहानियों में स्त्री का स्थान समाज के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रश्नचिह्न बनता है। गंजी का कुएँ तक जाना, आनंदी की संयमशीलता, बूढ़ी काकी की उपेक्षा और अन्य स्त्री पात्रों की सामाजिक विवशताएँ बताती हैं कि स्त्री-जीवन एक व्यापक सामाजिक प्रश्न है, न कि एक निजी मुद्दा। महिलाओं को सम्मान, सुरक्षा और निर्णय का अधिकार देने के बिना समाज की मानवीयता पूरी नहीं हो सकती। इस सत्य को प्रेमचंद कहानी में बताते हैं।

बाल-मन, करुणा और मानवीय मूल्य

ईदगाह प्रेमचंद की सबसे प्रसिद्ध कहानियों में से एक है, लेकिन इसकी लोकप्रियता सिर्फ भावुकता नहीं है। हामिद का चरित्र बचपन की भावनाओं का प्रतीक है। मेले में मिठाई, खिलौने या मनोरंजन के आकर्षण को छोड़कर, वह अपनी दादी अमीना के लिए चिमटा खरीदता है ताकि रोटी बनाते समय उसके हाथ न जलें। यह घटना बच्चे की करुणा और कर्तव्य को दिखाती है। जब एक बच्चा गरीबी में रहता है, तो वह दूसरों की पीड़ा को अधिक गहराई से समझता है। ईदगाह में होने वाले धार्मिक उत्सव के बावजूद, कहानी का केंद्र मानवीयता है। प्रेमचंद धर्म को कर्मकांड या पहचान से नहीं बाँधते। वे उसे साझा संवेदना और करुणा से जोड़ते हैं। हामिद का चिमटा पारिवारिक एकता, प्रेम और त्याग का प्रतीक बन जाता है। कहानी दिखाती है कि सामाजिक चेतना केवल अन्याय की आलोचना से नहीं बनती, बल्कि करुणा की पहचान से भी बनती है। प्रेमचंद ने दो बैलों की कहानी में काम, निष्ठा और स्वतंत्रता का पाठ पढ़ाया। मोती और हीरा केवल जीव नहीं हैं; वे काम करने वाले जीवों का चित्रण करते हैं। उनमें मित्रता, आत्मविश्वास और अन्याय के खिलाफ संघर्ष दिखाई देते हैं। प्रेमचंद इस कहानी में मनुष्य-पशु संबंध के माध्यम से शोषण और करुणा का गंभीर प्रश्न उठाते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि उनकी सामाजिक चेतना केवल मनुष्य-केंद्रित नैतिकता नहीं है, बल्कि जीवन के प्रति एक संवेदनशील दृष्टि है।

नैतिकता, न्याय और सामाजिक उत्तरदायित्व

प्रेमचंद की कहानियों में न्याय और नैतिकता का भाव भी शामिल है। नमक का दारोगा में वंशीधर का चरित्र औपनिवेशिक प्रशासन, रिश्वतखोरी और व्यक्तिगत ईमानदारी का संघर्ष है। वंशीधर रिश्वत नहीं मानता, लेकिन पंडित अलोपीदीन धन और प्रभाव के बल पर कानून को अपने पक्ष में करना चाहता है। उसे अल्पकाल में नुकसान उठाना पड़ता है, लेकिन उसकी ईमानदारी बाद में सम्मान का मूल बनती है। कहानी बताती है कि

समाज में न्याय स्थापित करने के लिए व्यक्तिगत साहस की जरूरत है। परमेश्वर में न्याय की चेतना पंचायत की संस्था से जुड़ती है। जब पंच के रूप में निष्पक्ष निर्णय देना पड़ता है, अलगू और जुम्न की मित्रता परीक्षा में पड़ती है। यहाँ प्रेमचंद कहते हैं कि न्याय की स्थिति व्यक्ति को अपने स्वार्थ से ऊपर उठा सकती है। कथा में आदर्शवाद है, लेकिन यह सामाजिक आवश्यकता से आता है। न्यायपालिका जाति, मित्रता, स्वार्थ और प्रभाव से ऊपर नहीं उठती तो समाज में विश्वास समाप्त हो जाता है। इन कहानियों में प्रेमचन्द नैतिकता को सामाजिक कर्तव्य की जगह व्यक्तिगत सद्गुण की तरह बताते हैं। ईमानदारी, न्याय, संवेदना और निष्पक्षता तभी काम करती हैं जब कमजोर और वंचित लोगों को बचाया जाता है। इस तरह, प्रेमचन्द की सामाजिक चेतना ही उसकी नैतिक चेतना का हिस्सा है।

सामंती मानसिकता और ऐतिहासिक अचेतनता

शतरंज के खिलाड़ी प्रेमचन्द की ऐतिहासिक-सामाजिक दृष्टि का बड़ा उदाहरण है। कथा अवध में घूमती है, जहाँ मीर और मिर्जा शतरंज खेलते हैं और राजनीतिक बदलाव और ऐतिहासिक संकट से बच जाते हैं। जैसे-जैसे अंग्रेजी सत्ता बढ़ती जाती है, सामंती अभिजात वर्ग अपनी विलासी और निष्क्रिय दुनिया में बंद हो जाता है। शतरंज यहाँ खेल नहीं, बल्कि सामाजिक पलायन का प्रतीक बन जाता है। कहानी में प्रेमचन्द व्यंग्य से सामंती वर्ग को घेरते हैं। विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग ने जनता और इतिहास की जिम्मेदारियों को छोड़ दिया है। उसकी समझ व्यक्तिगत शौक, प्रतिष्ठा और अहंकार से सीमित है। अंततः, ऐतिहासिक अचेतनता से राजनीतिक पराधीनता संभव होती है। यहाँ प्रेमचन्द बताते हैं कि समाज को बचाने के लिए सक्रिय सामाजिक और ऐतिहासिक जिम्मेदारी भी आवश्यक है। शतरंज के खिलाड़ी को आज भी पढ़ा जा सकता है। जब कोई वर्ग ऐतिहासिक रूप से अप्रासंगिक हो जाता है जब वह अपने अधिकारों में इतना डूब जाता है कि वह समाज की वास्तविक समस्याओं से कट जाता है। यहाँ, वर्गीय आलोचना और राजनीतिक विवेक प्रेमचन्द की सामाजिक चेतना का रूप लेते हैं।

धार्मिक चेतना, पाखंड और मानवतावाद

धर्म प्रेमचंद की कहानियों में एक नहीं है। वे धर्म में मानवीय संभावना को मानते हैं, लेकिन धार्मिक पाखंड, कर्मकांड और जातिगत अहंकार की सख्त आलोचना करते हैं। सद्गति में धर्म जातिगत शोषण को छिपाता है। पादरी का व्यवहार सामाजिक अधिकारों का प्रतीक है, न कि धर्म की नैतिकता। ईदगाह में, इसके विपरीत, धार्मिक उत्सव मानवीय करुणा, प्रेम और त्याग का आधार बनाते हैं। प्रेमचंद के लिए धर्म का मूल्य यह है

कि क्या वह लोगों को अधिक न्यायप्रिय, संवेदनशील और करुणाशील बनाता है। प्रेमचन्द का विचार है कि धर्म छुआछूत, अहंकार और भेदभाव से लोगों को बाँधता है। वह मानवता, सहयोग और सेवा को बढ़ाकर सामाजिक सद्भाव का माध्यम बन सकता है। इस दृष्टि से प्रेमचन्द की सामाजिक चेतना अमानवीय धार्मिकता के खिलाफ है, नहीं धर्म के खिलाफ है। प्रेमचन्द का मानवतावाद आम आदमी की गरिमा पर आधारित है। वे किसी जाति, धर्म या वर्ग को सर्वोच्च सत्य नहीं मानते; उनके लिए सर्वोपरि मनुष्य की पीड़ा और न्याय की आवश्यकता है। इसलिए उनकी कहानियाँ सांप्रदायिक सौहार्द, सामाजिक समता और नैतिक जीवन की बड़ी संभावना दिखाती हैं।

कथा-शिल्प, भाषा और सामाजिक अर्थ

प्रेमचन्द का कथा-शिल्प समाज को प्रभावित करता है। वे व्यापक सिद्धांतों का उपयोग नहीं करते; वे छोटी-छोटी घटनाओं को बड़ा सामाजिक महत्व देते हैं। प्याज की रात में ठंड, कफन में मौत, ठाकुर का कुआँ में पानी, ईदगाह में चिमटा, बूढ़ी काकी में खाना और शतरंज के खिलाड़ी में खेल—ये सब साधारण घटनाएँ हैं, लेकिन प्रेमचन्द इन्हें सामाजिक प्रतीक बनाता है। उनकी भाषा सरल, सहज और पात्रानुकूल है। इसलिए उनकी कहानियाँ पाठक से सीधे जुड़ती हैं। यथार्थता और स्थानीयता को मध्यवर्गीय नैतिकता, धार्मिक घटनाओं, प्रशासनिक भाषा और घरेलू बहस में देखा जा सकता है। डेविड रूबिन द्वारा अनूदित चुनिंदा कहानियों में भी प्रेमचन्द की कथात्मक व्यापकता और सामाजिक विविधता को उजागर किया गया है (Premchand, 2001)। कथा के अंत भी प्रेमचन्द की लेखनी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। पाठक को कफन के अंत में कठिन प्रश्नों से भरा जाता है; पूस की रात का अंत दुखद और दुखद है; नैतिक विजय का संकेत नमक का दारोगा का अंत है; पंच न्याय की क्षमता में विश्वास जगाता है। इस विविधता से स्पष्ट है कि प्रेमचन्द की सामाजिक चेतना अलग-अलग तरह से काम करती है; वह व्यंग्य, करुणा, प्रतीक और आदर्श के माध्यम से समाज को समझाती है।

समकालीन संदर्भ में प्रेमचन्द की प्रासंगिकता

यद्यपि प्रेमचन्द की कहानियाँ अतीत की हैं, वे आज भी महत्वपूर्ण हैं। आज भी समाज में आर्थिक असमानता, किसान संकट, जातिगत भेदभाव, वृद्धों की उपेक्षा, स्त्री की असुरक्षा, भ्रष्टाचार, धार्मिक पाखंड और नैतिक विघटन के मुद्दे हैं। प्रेमचन्द की कहानियाँ हमें इन परेशानियों के मूलों को समझने में मदद करती हैं। वे बताती हैं कि सामाजिक अन्याय केवल कानून और नीति नहीं है; यह मनुष्य के व्यवहार, मानसिकता, भाषा और

संबंधों में भी होता है। प्रेमचन्द का साहित्य आज भी समकालीन भारत में लोकतंत्र, समानता, सामाजिक न्याय और मानवाधिकार की बहसों को समझने में सहायक है। उनकी कहानियाँ बताती हैं कि आर्थिक विकास समाज को मानवीय बनाने के लिए पर्याप्त नहीं है; इसके लिए नैतिक संवेदना, संस्थागत न्याय, जातिगत समानता, स्त्री सम्मान और कमजोर वर्गों के प्रति उत्तरदायित्व भी चाहिए। साहित्य को समाज से जोड़ते हुए भी, प्रेमचन्द अपनी कलात्मकता को नहीं खोते। उनकी कहानियाँ उपदेश नहीं देतीं, बल्कि पाठक को सोचने पर मजबूर करती हैं। वे समाज की आलोचना

करते हैं, लेकिन लोगों में बदलाव की संभावना भी रखते हैं। इस संतुलन के कारण प्रेमचन्द हिंदी साहित्य में ऐसे कथाकार हैं जिनकी सामाजिक चेतना आज भी चर्चा का विषय है।

विशेष रूप से आज की अकादमिक दुनिया में प्रेमचन्द की कहानियाँ साहित्य, समाजशास्त्र, इतिहास और नैतिक दर्शन से बातचीत करती हैं, इसलिए उनका पुनर्पाठ आवश्यक है। वे पाठक को बताती हैं कि रचना का महत्व कथा के बाहर सामाजिक मुद्दों की गहराई में भी है।

समीक्षा-सारणी: प्रमुख कहानियाँ और सामाजिक आयाम

कहानी	प्रमुख सामाजिक प्रश्न	मुख्य पात्र/प्रतीक	सामाजिक चेतना का संकेत
पूस की रात	किसान-जीवन, कर्ज, गरीबी	हल्कू, ठंडी रात, खेत	श्रमशील वर्ग की असुरक्षा और आर्थिक शोषण
कफन	भूख, निर्धनता, संवेदना का क्षरण	घीसू-माधव, कफन	सामाजिक उपेक्षा से उत्पन्न नैतिक विडंबना
सद्गति	जाति-व्यवस्था और अस्पृश्यता	दुखी चमार, पंडित	धार्मिक पाखंड और जातिगत शोषण की आलोचना
ठाकुर का कुआँ	जल-संसाधन पर जातिगत नियंत्रण	गंगी, कुआँ	मूल अधिकारों से वंचित समुदाय का संघर्ष
ईदगाह	गरीबी, करुणा, बाल-संवेदना	हामिद, चिमटा	मानवीय प्रेम और त्याग की प्रतिष्ठा
नमक का दारोगा	भ्रष्टाचार और ईमानदारी	वंशीधर, अलोपीदीन	नैतिक साहस और न्याय की चेतना
पंच परमेश्वर	निष्पक्ष न्याय और सामाजिक विश्वास	अलगू, जुम्नन, पंचायत	निजी स्वार्थ से ऊपर सामाजिक न्याय
शतरंज के खिलाड़ी	सामंती निष्क्रियता और राजनीतिक अचेतनता	मीर-मिर्जा, शतरंज	विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग की ऐतिहासिक जिम्मेदारी की आलोचना

निष्कर्ष

प्रेमचन्द की कहानियों में सामाजिक चेतना कई तरह से दिखाई देती है। उसमें किसानों और मजदूरों की आर्थिक पीड़ा, जाति-व्यवस्था की क्रूरता, महिलाओं और बुजुर्गों के जीवन की उपेक्षा, बाल-मन की करुणा, भ्रष्टाचार के खिलाफ नैतिक संघर्ष, सामंती वर्ग की आलोचना और धार्मिक-सामाजिक पाखंड के खिलाफ मानवतावादी दृष्टिकोण शामिल हैं। प्रेमचन्द की कथा-दृष्टि पाठक को सभ्यता, धर्म, परिवार, न्याय और नैतिकता जैसे शब्दों का असली अर्थ खोजने पर मजबूर करती है। इस समीक्षा से स्पष्ट होता है कि प्रेमचन्द की सामाजिक चेतना केवल उसके जीवनकाल तक सीमित नहीं है। उन्हें बताई गई कहानियाँ आज भी महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे सामाजिक मुद्दों को लोगों के जीवन से जोड़ती हैं। वे समाज को भीतर से देखती हैं, न कि बाहर से। वे दिखाते हैं कि अन्याय केवल संस्थाओं में नहीं, बल्कि मनुष्य की आदतों, संबंधों और संवेदनहीनता में भी है। प्रेमचन्द का साहित्य हमें बताता है कि साहित्य की वास्तविक शक्ति

संवेदना, आलोचना और बदलती चेतना में है, न कि सिर्फ सौंदर्य में। उनकी कहानियाँ लोगों को मानवीय बनाने, समाज को न्यायपूर्ण बनाने और पाठकों को सजग बनाने में सक्षम हैं। प्रेमचन्द की कहानियों में सामाजिक चेतना हिंदी साहित्य की एक अनमोल उपलब्धि है, जो आज भी भारतीय समाज को समझने और उसे मानवीय दिशा में आगे बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण मार्गदर्शन देता है।

संदर्भ-सूची

1. प्रेमचन्द. (2022). मानसरोवर, खंड 1-8. लोकभारती प्रकाशन.
2. प्रेमचन्द. (विभिन्न संस्करण). प्रेमचन्द की सम्पूर्ण कहानियाँ. राजकमल प्रकाशन.
3. राय, अमृत. (2006). प्रेमचन्द: कलम का सिपाही. साहित्य अकादेमी.
4. शर्मा, रामविलास. (2016). प्रेमचन्द और उनका युग. राजकमल प्रकाशन.

-
5. Premchand. "The World of Premchand: Selected Short Stories (D. Rubin, Trans.)" *Oxford University Press*. (2001).
6. Premchand. "Widows, Wives and Other Heroines: Twelve Stories by Premchand (D. Rubin, Trans.)" *Oxford University Press*. (1998).

Source of support: Nil; Conflict of interest: Nil.

Cite this article as:

डॉ नरेश कुमार वर्मा , "प्रेमचन्द की कहानियों में सामाजिक चेतना: एक समीक्षात्मक अध्ययन." *Sarcouncil Journal of Arts and Literature* 1.5 (2022): pp 22-27.